

202017 - हदीसः (ऐ अल्लाह! रजब और शाबान में हमें बर्कत दे, और हमें रमज़ान तक पहुँचा) ज़ईफ है, सही नहीं है।

प्रश्न

मैं जानना चाहता हूँ कि क्या रजब की पहली रात को कोई निर्धारित दुआ पढ़ना सुन्नत से प्रमाणित है?

और वह दुआ यह है :

"अल्लाहम्मा बारिक लना फी रजब व शाबान व बल्लिग्ना रमज़ान" (ऐ अल्लाह! रजब और शाबान में हमें बर्कत दे, और हमें रमज़ान तक पहुँचा) अल्लाह सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता हूँ कि हमें प्रमाणित सुन्नत पर अमल करने पर सुदृढ़ रखे।

विस्तृत उत्तर

सर्व प्रथमः

रजब के महीने की फ़ज़ीलत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई हदीस सही नहीं है। प्रश्न संख्या (75394), (171509) का उत्तर देखें।

तथा शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह फरमाते हैं :

"रजब की फ़ज़ीलत (विशेषता) में कोई हदीस नहीं आई है, तथा रजब का महीना अपने पूर्व महीने जुमादल-आखिरा से उत्कृष्ट नहीं है सिवाय इसके कि वह हराम महीने में से है। अन्यथा उसमें कोई धर्मसंगत रोज़ा, या धर्मसंगत नमाज़ या धर्मसंगत उम्रा नहीं है और न तो कोई अन्य चीज़ है, वह अपने अलावा अन्य महीनों के समान है।" सारांशित रूप से संपन्न हुआ।

"लिकाउल बाबिल मफतूह" (174/26) मक्कबा शामिला की नंबरिंग के साथ।

दूसरा :

अब्दुल्लाह बिन इमाम अहमद ने "ज़वाइदुल मुसनद" (हदीस संख्या : 2346) में और तब्रानी ने "अल-औसत" (3939) में, बैहकी ने "शोअबुल ईमान" (3534) में और अबू नुएम ने "अल-हिल्या" (6/269) में ज़ाइदा बिन अबिरक्काद के तरीक़ से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा : हमसे हदीस उल्लेख किया जियाद अन-नुमैरी ने, उन्होंने ने अनस बिन मालिक से रिवायत किया कि उन्होंने कहा : जब रजब का महीना दाखिल होता तो अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहा करते थे :

"अल्लाहम्मा बारिक लना फी रजब व शाबान व बल्लिग्ना रमज़ान"

(ऐ अल्लाह! तू रजब और शाबान में हमें बर्कत दे, और हमें रमज़ान तक पहुँचा)

यह एक कमज़ोर इसनाद है, ज़ियाद नुमैरी ज़ईफ है, उसे यहां बिन मुईन ने ज़ईफ कहा है। तथा अबू हातिम का कहना है कि: उससे हुज्जत (दलील) नहीं पकड़ी जायेगी। तथा इब्ने हिब्बान ने उसे अज़ज़ोअफा (यानी ज़ईफ व कमज़ोर रायियों की सूचि) में उल्लेख किया है और कहा है कि उससे हुज्जत पकड़ना जायज़ नहीं है। “मीज़ानुल एतिदाल” (2/91).

तथा ज़ाइदा बिन अबिरक्काद उनसे अधिक कमज़ोर हैं। अबू हातिम ने कहा : वह ज़ियाद अन-नुमैरी के माध्यम से अनस से मरफूआ मुनकर हदीसें रिवायत करते हैं, और हम नहीं जानते कि यह उनकी ओर से हैं या ज़ियाद की ओर से। तथा बुखारी ने कहा : वह मुनकरूल हदीस हैं। तथा नसाई ने कहा : वह मुनकरूल हदीस हैं। तथा अल-कुना में फरमाया : वह सिक्का (भरोसेमंद) नहीं हैं। तथा इब्ने हिब्बान ने कहा : वह मशहूर लोगों से मुनकर हदीसें रिवायत करते हैं, उनकी सूचना (हदीस) से दलील नहीं पकड़ी जायेगी और न तो उसे लिख जायेगा सिवाय इसके कि वह एतिबार (उस हदीस के दूसर तरीकों के बारे में खोज करने) के लिए हो। तथा इब्ने अदी ने कहा : अल-मक्दमी वगैरह ने उनसे इफराद (आहाद) हदीसें रिवायत की हैं, और उनकी कुछ हदीसों में मुनकर पाया जाता है।

“तहज़ीबुत तहज़ीब” (3/3305-306)

इस हदीस को इमाम नववी ने “अल-अज़कार” (पृष्ठ 189) में और इब्ने रजब ने “लताइफुल मआरिफ” (पृष्ठ 121) में ज़ईफ क्रारर दिया है और इसी तरह अल्बानी ने “ज़ईफुल जामे” (4395) में ज़ईफ कहा है। तथा अल-हैसमी कहते हैं:

“इसे बज़्जार ने रिवायत किया है, और इसमें ज़ाइदा बिन अबिरक्काद है, जिसके बारे में बुखारी ने मुनकरूल हदीस कहा है, जबकि मुहद्देसीन के एक समूह ने उसे मजहूल कहा है।” “मजमऊज़ज़वाइद” (2/165).

फिर यह हदीस - ज़ईफ होने के साथ - इसमें यह बात नहीं है कि यह दुआ रजब की पहली रात को पढ़ी जायेगी, बल्कि यह उसमें बर्कत के लिए एक सामान्य दुआ है, और यह रजब के महीने में और रजब के महीने से पहले भी सही है।

तीसरा :

जहाँ तक मुसलमान के अपने पालनहार से यह प्रश्न करने की बात है कि वह उसे रमज़ान तक पहुँचाए, तो इसमें कोई हरज (आपत्ति) की बात नहीं है।

हाफिज़ इब्ने रजब रहिमहुल्लाह कहते हैं :

“मुअल्ला बिन अल-फ़ज़ल कहते हैं : वे (पुनीत पूर्वज) अल्लाह तआला से छह महीने यह दुआ करते थे कि उन्हें रमज़ान तक पहुँचाए, और छह महीने तक यह दुआ करते थे कि उनसे क़बूल करे। तथा यहां बिन अबी कसीर कहते हैं : उनकी दुआओं में से यह भी था कि : “अल्लाह हुम्मा सल्लिम्नी इला रमज़ान, व सल्लिम ली रमज़ान व-तसल्लमहु मिन्नी मुतक़ब्बला” (ऐ अल्लाह तू मुझे रमज़ान तक सुरक्षित रख, और रमज़ान को मेरे लिए सुरक्षित रख और उसे मुझसे स्वीकर कर ले)।” लताइफुल मआरिफ (पृष्ठ 148) से अंत हुआ।

तथा शैख अब्दुल करीम अल-खुज़ैर हाफिज़हुल्लाह से प्रश्न किया गया :

हीदीसः (अल्लाहुम्मा बारिक लना फी रजब व शाबान व बल्लिग़ाना रमज़ान) की प्रामाणिकता क्या है?

तो उन्होंने उत्तर दिया :

"यह हीदीस प्रमाणित नहीं है, लेकिन यदि मुसलमान यह दुआ करता है कि अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल उसे रमज़ान तक पहुँचाए, तथा उसे उसका रोज़ा रखने और क्रियाम करने की तौफीक़ दे, और उसे लैलतुल क़द्र पाने की तौफीक़ दे। अर्थात् वह सामान्य दुआएं करे तो इन शा अल्लाह इसमें कोई आपत्ति की बात नहीं है।"

शैख की साइटः

<http://khudheir.com/text/298>

से अंत हुआ।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।